भारत हमेशा से कृषि प्रधान देश रहा है। इसकी अर्थव्यवस्था कृषि तथा एनिमल हसबेंडरी पर टिकी हुई है। किसान के लिए बैल सबसे अधिक सहायक होता है। जो खेत को जोतने से लेकर अनाज निकालने के बाद उसे मंडी तक पहुचाने में भी मदद करता है। खाद- किसानों को पशुपालन से दूसरा सबसे बड़ा लाभ खाद की प्राप्ति है, फसल के अच्छे उत्पादन के लिए प्राकृतिक खाद की आवश्यकता रहती है। जो इन पशुओं के पालन से पूर्ति संभव है। पशुधन जिनमें घोड़ा तथा ऊंट परिवहन के महत्वपूर्ण साधन है। जो बोझा धोने तथा गाड़ी चलाने का कार्य भी करते है। रेगितान में ऊट सबसे उपयुक्त साधन है। पशुओं से दूध, दही, घी, मक्खन, पनीर तथा इनसे निर्मित उत्पादों की प्राप्ति होती है। पशुओं के मरने के बाद चमड़ा, सींग तथा उनकी हड्डियाँ कई उद्योगों का आधार है। अधिकतर ऊनी कम्बल और सर्दी ऋतु के वस्त्र भेड़ की ऊन से ही प्राप्त होते है। इसके अतिरिक्त बकरी तथा अन्य पशुओं के बाल के कालीन तथा भाकल बनाये जाते है। देश की प्रगति तथा किसानों की दशा सुधारने में पशुपालन का अहम योगदान रहा है। पशुपालन से राज्य तथा देश की आय के स्त्रोत बढ़ने के साथ ही पशुओं से प्राप्त होने वाले कच्चे उत्पादों से कई उद्योग धंधे लोगों को रोजगार दिलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।

पशु किसान के साथी

पशुपालन कृषि का पूरक व्यवसाय

भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के बाद पशुपालन का सकल घरेलू उत्पाद में सबसे अधिक योगदान रहता हैं। एक कृषक अच्छी तरह जानता हैं कि पशुपालन कैसे करें लाभ कमाई तथा समुचित देखभाल की जानकारी के बिना इसके अधिक फायदे नही मिल पाते हैं। पशुपालन कृषि का पूरक व्यवसाय हैं। प्राचीनकाल से ही मनुष्य पशुओं का पालन करके उनका उपयोग करता रहा हैं। आधुनिक युग में मशीनीकरण के कारण मानव की पशुओं पर निर्भरता कम होती जा रही हैं। फिर भी पशुपालन आज भी जनसंख्या के बड़े भाग को रोजगार उपलब्ध करवा रहा हैं। अन्य देशों की तुलना में भारत में सर्वाधिक पालतू पशु हैं। तथा वर्तमान में भारत विश्व में दुग्ध उत्पादन करने वाला पहला देश हैं। पशुपालन के अंतर्गत गाय, भैंस, ऊँट, बकरी, भेड़, घोड़ा आदि का पालन कर उनसे दूध, मांस, ऊन, चमड़ा, गोबर प्राप्त किया जाता हैं तथा इसका उपयोग कृषि कार्यों में भी किया जाता हैं।

भारतवर्ष में पशुपालन का कार्य शताब्दियों से चला आ रहा है। घरेलू आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए पशुपालन को मिश्रित खेती के रूप में अपनाने से परिवार को दूध, माँस, अंडा, ऊन, चमड़ा, कम्बल, स्वेटर, व अन्य ऊनी वस्त्र आदि प्राप्त होते है। साथ ही पशु कृषि कार्य में भी सहयोग देते है। पशुओ से प्राप्त गोबर मूत्र खाद के रूप में काम आता है। इस प्रकार पशुपालन हमारे जीवन का एक अहम अंग बन चूका है। पशुपालन कृषि का एक अभिन्न अंग है। भारत में अधिकाशत मिश्रीत खेती होती है। जिसमे फसल उत्पादन के साथ साथ दूध, माँस,अंडा, ऊन उत्पादन के लिए पशुपालन किया जाता है। ये दोनों ही व्यवसाय एक दुसरे के पूरक है। पशुधन के प्रबन्धन को पशुपालन कहते है। विभिन्न पशुओ यथा गाय, भैस, बैल, ऊँट, बकरी, घोड़े आदि का पालन किया जाता है। यह कृषि का एक अभिन्न अंग है। क्युकि कृषि से पशुओ को चारा भूसा तथा दाना इत्यादि प्राप्त होते है।दूसरी तरफ किसानों को पशुओ से प्राकृतिक खाद, दूध घी, चमड़ा,ऊन, माँस, हड्डियाँ आदि उपयोगी पदार्थ प्राप्त होते है। इसके अतिरिक्त बैलगाड़ी चलाने, सिंचाई करने, हल चलाने, वजन ढोने आदि सभी कार्यो में किसान को पशुओं से मदद मिलती है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि एवं पशुपालन का विशेष महत्व है। सकल घरेलू कृषि उत्पाद में पशुपालन का 28-30 प्रतिशत का योगदान सराहनीय है जिसमें दुग्ध एक ऐसा उत्पाद है जिसका योगदान सर्वाधिक है। भारत में विश्व की कुल संख्या का 15 प्रतिशत गायें एवं 55 प्रतिशत भेड़ है और देश के कुल दुग्ध उत्पादन का 53 प्रतिशत भैंसों व 43 प्रतिशत गायों और 3 प्रतिशत बकरियों से प्राप्त होता है। भारत लगभग 121.8 मिलियन टन दुग्ध उत्पादन करके विश्व में प्रथम स्थान पर है जो कि एक मिसाल है और उत्तर प्रदेश इसमें अग्रणी है। यह उपलब्धि पशुपालन से जुड़े विभिन्न पहलुओं ; जैसे- मवेशियों की नस्ल, पालन-पोषण, स्वास्थ्य एवं आवास प्रबंधन इत्यादि में किए गये अनुसंधान एवं उसके प्रचार-प्रसार का परिणाम है। लेकिन आज भी कुछ अन्य देशों की तुलना में हमारे पशुओं का दुग्ध उत्पादन अत्यन्त कम है और इस दिशा में सुधार की बहुत संभावनायें है।

गाय के गोबर से बना इको फ्रेंडली पेंट

गोबर से बना पेंट, बना लिपाई का विकल्प, ओडिशा की एक गृहिणी ने शुरू किया बिजनेस

एक समय था, जब लोग गाय के गोबर की समस्या से परेशान होकर पशुपालन से नहीं जुड़ते थे। वहीं, कुछ लोग दूध देने वाली गायों को प्यार से रखते थे और जो गाय दूध नहीं देती थी, उसे सड़कों पर घूमने के लिए छोड़ देते थे। लेकिन आज गोबर का उपयोग इतना बढ़ गया है कि लोग सिर्फ गोबर के लिए ही गाय पालने लगे हैं। गोबर से बने कागज और लकड़ियों के बाद, अब देशभर में गोबर से बना ईको-फ्रेंडली पेंट भी काफी बिक रहा है।

लोगों के बीच जागरूकता के लिए उठाए कई कदम

ओडिशा में गोबर पेंट का सबसे पहला यूनिट डालने वाली 33 वर्षीया दुर्गा प्रियदर्शनी ने जयपुर से गोबर पेंट बनाने की ट्रेनिंग लेने के बाद, बिजनेस की शुरुआत की है। दुर्गा 2 साल पहले तक एक गृहिणी थीं। लेकिन वह अपनी खुद की अलग पहचान बनाना चाहती थीं और इसके लिए वह सही मौके और बिजनेस आइडिया की तलाश में थीं। दुर्गा कहती हैं, 'मुझे हमेशा से डेयरी बिजनेस में रुचि थी। हरियाणा और पंजाब में गाय का दूध जिस उत्तम गुणवत्ता के साथ मिलता है, वैसा ओड़िसा में नहीं मिलता था। इसलिए मैंने पहले डेयरी बिजनेस का काम चुना और हरियाणा के एक झज्जर गांव झज्जर में रहकर पशुपालन सीखने लगी। लेकिन उसी दौरान मैंने इंटरनेट पर एक वीडियो देखा, जहां गोबर से पेंट बनाया जा रहा था।' दुर्गा को यह काम इतना अच्छा लगा कि उन्होंने पशुपालन के बजाय, पेंट बनाने का काम शुरू करने का फैसला किया।

दुर्गा का कहना है कि वह अपने काम के जरिए सोशल सर्विस भी करना चाहती थीं। अगर वह दूध का बिजनेस करतीं, तो बस उन्हीं गायों की सेवा कर पातीं, जो दूध देती हैं। लेकिन इस बिजनेस के जरिए वह किसानों और गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने में मदद कर रही हैं। उन्होंने साल 2021 में जयपुर में रहकर, पांच दिन के ट्रेनिंग प्रोग्राम में भाग लिया, जिसके बाद उन्होंने खादी इंडिया के अंतर्गत ओड़िसा में अपने ग्रीन फील प्लांट की शुरुआत की। उन्होंने जनवरी 2022 में अपनी फैक्ट्री बनाने के लिए बरगढ़ के पास एक गांव में 2500 स्क्वायर फीट जमीन खरीदी, ताकि गांववालों से गोबर खरीद सकें। मशीनें, जमीन और मार्केटिंग सहित वह अब तक एक करोड़ का निवेश कर चुकी हैं।

कैसे बनता है गोबर से पेंट: इस पेंट को बनाने के लिए, दुर्गा आस-पास के किसानों से पांच रुपये प्रति किलो की कीमत पर गोबर लेती हैं और बाद में गोबर से लिक्विड और ड्राई तत्वों को अलग किया जाता है। पेंट बनाने के लिए सबसे पहले गोबर में पानी को बराबर मात्रा को डाला जाता है, जिसके बाद इसे ट्रिपल डिस्क रिफाइनरी में डालकर गाढ़ा किया जाता है। फिर इसमें कैल्शियम कंपोनेंट डालकर पेंट का बेस तैयार किया जाता है और उससे इमल्शन और डिस्टेंपर बनाया जाता है। इस पेंट में लगभग 30 प्रतिशत भाग गोबर ही होता है। फिर बेस कलर के साथ नेचुरल रंग ही मिलाएं जाते हैं, यानी यह पेंट पूरी तरह से ऑर्गेनिक है।

इसे घर के अंदर और बाहर दोनों जगह लगाया जा सकता है। प्राकृतिक पेंट, सामान्य केमिकल वाले पेंट जैसा ही लुक देता है। उन्होंने दावा किया है कि यह घर के तापमान को संतुलित करने का काम भी करता है। अभी वह 800 से ज्यादा रंगों के पेंट बना रही हैं। लोगों के बीच जागरूकता के लिए उठाए कई कदम : हालांकि, ऑर्गेनिक पेंट के लिए अभी तक लोगों में ज्यादा जागरूकता नहीं आई है। इसलिए इसकी मांग अभी कुछ वर्ग तक ही सिमित है। दुर्गा ने अपनी तरफ से प्राकृतिक पेंट की मार्केटिंग के लिए कई प्रयास किए हैं। उनका प्लांट, ओड़िशा का एकलौता प्लांट है, जो गोबर से पेंट बना रहा है। वह ओड़िशा सहित छत्तीसगढ़ के कुछ शहरों में भी मार्केटिंग का काम कर रही हैं। उन्होंने दोनों ही राज्यों में कुछ डीलर भी चुने हैं। साथ ही उन्होंने बताया कि वह कॉलेज और सेमिनार में भाग लेकर इस पेंट के फायदों के बारे में बात करती हैं, ताकि लोगों में जागरूकता आ सके। दुर्गा कहती हैं, 'पहले हमारे पास कोई विकल्प नहीं था, इसलिए हम घर में केमिकल वाले पेंट लगाते थे। लेकिन आज गोबर से बने पेंट, एक बढ़िया विकल्प क तौर पर बाज़ार में मौजूद हैं, फिर इसका इस्तेमाल करना ही चाहिए।' उन्होंने अभी तक करीब 4000 लीटर पेंट ओड़िसा और छत्तीसगढ़ में बेचा है। आप प्राकृतिक पेंट खरीदने के लिए उन्हें 7578014437 पर सम्पर्क कर सकते हैं। साथ ही आप Greenfeelpaints@outlook.com पर भी ऑर्डर दे सकते हैं।

26 साल का लड़का इंजीनियर की नौकरी छोड़, गाय-गोबर और गोमूत्र बेचकर लाखों रुपये कमा रहा

भारत सहित दुनिया भर में बड़ी तादात में भारतवासी अपनी आजीविका के लिए पशुओं को अपना जरिया बना रहे हैं। वे उनका दूध और दूध से बने अन्य उत्पाद बाजार में बेचकर पैसा कमाने में सबसे आगे हैं। कुछ लोग देसी खाद के रूप में खेतों में उपयोग किये जाने वाले गाय के गोबर को भी बेचकर पैसा कमाने का जरिया बना लिया है। आज हम जिस पशुपालन से आपको मिलवाने जा रहे हैं, वह केवल दूध और गोबर बेचकर ही पैसे नहीं कमाता बल्कि, वह गायों को नहलाने के बाद गोशाला ने निकलने वाले पानी को भी बेचकर पैसा कमाते है। अगर इस पशुपालन की कमाई की बात करें, तो आपको भरोसा नही होगा, लेकिन ये सच है कि इनके सामने बड़े-बड़े इंजीनियर कमाई के मामले में इनके आस-पास भी नही भड़कते हैं। आज हम आपको एक एसे आदमी के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसने इंजीनियरिंग छोड़ कर डेरी का काम शुरू कर लाखो रुपये महीना कमा रहे हैं। एक कामयाब किसान जयगुरु आचार हिंदर की बात कर रहे हैं, जिन्होंने इंजीनियरिंग की छोड़कर खेती और डेयरी का कार्य प्रारंभ किया पहले हिंदर एक निजी कंपनी में काम करते थे। उन्होंने विवेकानंद कॉलेज ऑफ इंजिनियरिंग दक्षिण कन्नड़ के पुत्तुर से इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त की है।

कैसे की डेयरी फार्म की शुरुआत: हिंदर के अनुसार उन्हें डेयरी फार्म का कार्य करने की प्रेरणा अपने पिता से मिली है। जब भी अपनी नौकरी से घर आते थे, तो अपना बाकी का वक़्त गाय की सेवा और खेती का कार्य करते थे। मगर वक़्त के साथ-साथ उनकी इस काम में दिलचस्पी बढ़ती गई। इसके बाद उन्होंने डेयरी फार्म शुरू किया।

डेयरी फार्म के साथ करते हैं अखरोट की खेती: आपको जानकारी के लिए बता दें कि हिंदर अपने डेयरी फार्म के अलावा अखरोट की खेती भी करते हैं। हिंदर का कहना है कि वह गाय के गोबर से लेकर दूध तक बेचकर लाखों रूपए महीने कमा रहे हैं। उन्हें हर महीने 750 लीटर दूध मिल जाता है, जिससे वह अच्छा लाभ कमा लेते हैं। इसके सिवाय दूध से बने घी से भी अच्छा पैसा कमा रहे हैं। आचार ने कहा कि इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान ही मैं डेयरी और उसकी उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के नए नए तरीके खोजने के प्रयास में लगा रहा। अब उनका व्यापार काफी व्यपाक रूप ले लिया है। उनके फार्म में अब 130 पशु हैं। उनका फार्म लगभग 10 एकड़ में फैला हुआ है और अब उनका परिवार 10 लाख रुपए प्रति माह आसानी से कमाने में सक्षम है। आने वाले समय में आचार की प्लानिंग दूध से बनने वाले पदार्थ बनाने वाली यूनिट लगाने की है। आचार ने कहा कि मैं यह जानता हूं कि यह 24 घंटे बिजी रहने वाली नौकरी है, लेकिन यहां में खुद का बॉस हूं और मुझे इसमें पूरी खुशी मिलती है। इसमें किसी भी प्रकार की कोई रोकटोक नही होती किसी की।